शांतिवन-गॉडलीवुड स्टूडियो। यज्ञ के इतिहास व ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी बयान करने वाली एक एनिमेटेड फिल्म 'भागीरथ' की लॉन्चिंग सेरिमनी के अवसर पर उपस्थित हैं दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. रमेश शाह, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. आत्मप्रकाश तथा अन्य।

पोखरा-नेपाल। भूकंप में मृत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने हेतु आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. भाई बहनें।

मुँगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। 'गीतों में गीता ज्ञान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक विनोद कुमार, ज़ोन संचालिका ब्र.कु. मनोरमा, स्थानीय संचालिका ब्र.कु. अनीता, प्रस्तुतकर्ता ब्र.कु. अविनाश तथा अन्य।

ढ़कौली-चण्डीगढ़। 'रीप्रोग्राम योर माइंड थ्रू मेडिटेशन' कार्यक्रम में मेमोरी मैनेजमेंट विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गौरव।

ऋषिकेश। सर्वधर्म सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए रामबीर जी, फारुखी अब्दुल्ला जी, जोगिन्दर सिंह जी, जॉनसन जी, ब्र.कु. आरती व ब्र.कु. बबिता।

नूह-हरियाणा। मेवात मॉडेल स्कूल में बच्चों को आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में बताते हुए ब्र.कु. संजय।

बहुत ही सहज है राजयोग.....

आज मनुष्य भयभीत है कि कभी भी कुछ भी हो सकता है, या कुछ हो न जाये! परन्तु उसे यह भी नहीं पता 'भय' या 'डर' हमारी स्वयं की पहचान या अज्ञानता के कारण ही है। जब हमें यह ज्ञान हो जाता है कि 'हम एक अजर, अमर अविनाशी आत्मा हैं तो यह डर भाग जाता है।'

गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने देखा कि हम बात कर रहे थे कि मैं अलग हूँ और मेरा अलग है। मैं `मेरे' को चलाने वाली एक शक्ति हूँ, एक ऊर्जा हूँ और इसी ऊर्जा से हम संचालित हैं। जब आप किसी की तारीफ करते हैं तो भी आप कभी शरीर का नाम नहीं लेते, आप हमेशा कहते हैं कि आप महान आत्मा हो, पुण्यात्मा हो, धर्मात्मा हो, देवात्मा हो आदि आदि। इसका अर्थ हुआ, हम आत्मा के साथ गुणों को जोड़ रहे हैं ना कि शरीर के साथ। इसलिए शरीर एक माध्यम है आत्मा को प्रदर्शित करने का।

आत्मा न समझने से मनुष्य मुख्य रूप से चार प्रकार के भय का शिकार हो जाता है। जिससे वो ना तो खुद जीता है और ना दूसरों को जीने देता है।

प्रथम: मरने का डर

मनुष्य को सबसे पहले मरने का बहुत डर होता है। मरने के भय के कारण वो निरंतर डर से जीवन जीता है। उसे हमेशा लगता है कि मेरा शरीर छूट न जाए! लेकिन जब आपको यह ज्ञान होगा या समझ होगी कि मैं एक चैतन्य अजर अमर अविनाशी सत्ता हूँ तो आपका डर या भय निकल जाएगा। वैसे तो आप पहले से ही मरे पड़े हैं, सिर्फ चलते-फिरते नज़र आते हैं। लेकिन जैसे ही आत्मा निकल जाती है तो शरीर मरता है न कि आत्मा। इसलिए हमें सबसे पहले आत्मा का ज्ञान, उसकी समझ होना अति आवश्यक है।

द्वितीय: विनाशी को अविनाशी मानना

मनुष्य को यह बात भूल जाती है कि यह देह विनाशी है, इसे एक दिन मिट्टी में मिल जाना है, और ऐसा होने पर सभी धन, पदार्थ, मित्र-सम्बन्धी आदि छूट जायेंगे। इस संसार की कोई भी वस्तु शाश्वत नहीं है। विनाशी है। सबकुछ परिवर्तनशील है। केवल आत्मा व परमात्मा ही नित्य हैं। इसी

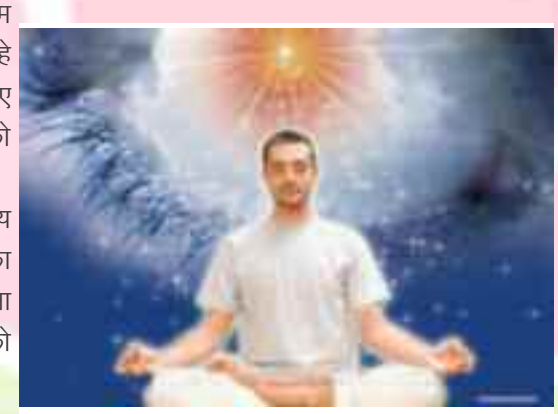

के कारण दुःख है, कष्ट है, तकलीफ है। जैसे ही इस सत्य को आप स्वीकार करेंगे, आप बिल्कुल खुश हो जायेंगे, जीवन निर्बाधगति से चलेगा।

तृतीय : दुःख को स्वाभाविक मानना

मानव की आज दशा ऐसी है कि वह हर एक घटने वाली घटना को प्राकृतिक या स्वाभाविक मानता है। उसका मानना है कि दुःख स्वाभाविक है। दुःख, सुख एक नियति है। जबकि `आत्म ज्ञान' से यह बात अलग लगेगी। दर्द स्वाभाविक है; जबकि दुःख एच्छिक है। दर्द अनिवार्य है, उदाहरण के लिए यदि आपको चोट लगी तो दर्द होगा ही होगा, जबकि आत्मा दुःखी तब होगी, जब वो दुःख लेना चाहेगी।

चतुर्थ : मोह अथवा राग अति आवश्यक

जब हम अपने को देह मानते हैं तो हमें देह से मोह हो जाता है, और आपको और हमें यह बात पता होनी चाहिए कि मोह के कारण कार्य करने की क्षमता या सहन करने की क्षमता कम हो जाती है। असल में जिससे आपका `मोह' होगा, उसके न मिलने पर द्वेष या क्रोध उत्पन्न होता है। इसी से सबकुछ खो जाने का `भय' भी बना रहता है।

उपरोक्त चारो बातों का सार यह है कि जब हम अपने आपको देह समझेंगे तो उससे देह अभिमान उत्पन्न होगा। देह-अभिमान – अर्थात् देह देखेंगे तो उससे प्राप्त करने की कामना या काम विकार पैदा होगा। काम की या कामना की पूर्ति ना होना क्रोध की उत्पत्ति करता है और यह क्रोध, मोह या राग को जन्म देता है। जिसकी आपूर्ति हेतु आप कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। जिससे लोभ वृत्ति बढ़ जाती है। यही लोभ वृत्ति अहंकार में परिवर्तित हो जाती है।

भाव यह है कि देह समझने से या इस अज्ञानता से काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार पैदा हो जाता है। और आत्मज्ञान से आत्मा समझने से वह डर भाग जाता है। हम बिल्कुल निश्चिन्त जीवन जीते हैं।

- क्रमशः

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-2

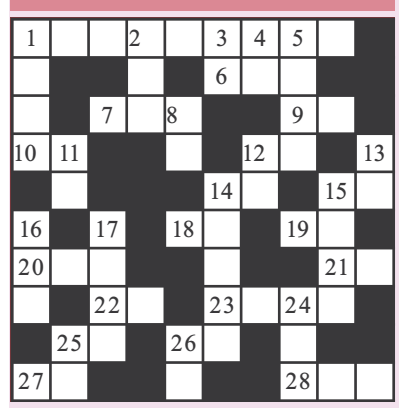

बायें से दायें

1. बाबा का एक नाम, ...करा रहा है (9)
6. राज्य, प्रान्त, शहर, कस्बा (3)
7. श्रेष्ठ, उत्तम (3)
9. आत्मा, प्राण (2)
10. सर्वशास्त्र शिरोमणि..... (2)
12. विचार, कथन, आज्ञा (2)
14. रात का विलोम, सतयुग है ब्रह्मा का.....(2)
15. काज, कर्म, करने की क्रिया (2)
18. समय (2)
19. स्थान, घर, निवास-स्थान (2)
20. आक्रमण, धावा (3)
21. विजय, तुम बच्चों को माया पर..... पानी है (2)
22. प्रान्त, साम्राज्य, सतयुग में लक्ष्मी नारायण का ..... होता है (2)
23. विनाश, ... के समय कब्रदाखिल रूहें जाग उठेंगी (4)
25. दुःख, तकलीफ, परेशानी की अनुभूति (2)
26. लुप्त होना, छिपना, अस्तित्व हीन (2)
27. कार्य, काम.... (2)
28. शिक्षा, समझ, समझानी (3)

- ब्र.कु. राजेश, शांतिवन

ऊपर से नीचे

1. कर्म में योग को शामिल करने वाले (4)
2. अनुबन्ध, वादा (3)
3. जंगल, कानन (2)
4. संख्या, अंगूठी में लगने वाला पत्थर (2)
5. यह सृष्टि..... का खेल है (2-2)
8. बहुत मूल्य वस्तु, तुम बच्चे बाप के मस्तक .... हो (2)
11. सितारा, रात को गगन में चमकने वाला (2)
12. आत्मा का मुख्य अंग (2)
13. भारत की प्राचीन जाति (2)
14. मायूस, दिलहोल (5)
15. काम पर विजयी (2-2)
16. क्षमा, तरस, दया (3)
17. दिल से सम्बन्धित बाबा का नाम (4)
24. माँ का प्यार, स्नेह, प्यार (3)
25. हाथी, ग्राह ने जिसे पकड़ा था (2)
26. ..... नहीं तो कब नहीं, इस समय (2)

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली अंक 1 का उत्तर

बायें से दायें
1. दुस्तर
2. नौकर-चाकर
5. काया
6. नमस्कार
8. मजहब
10. नत
11. रास
12. कबूल
13. सूरत
15. मत
16. हसरत
18. लानत
20. जग
21. गम
22. सनातन
24. सात
26. टन
27. हाथ
28. अवज्ञा

ऊपर से नीचे
1. दुश्मन
2. नौका
3. कयामत
4. रथ
7. मजबूत
9. बारात
10. नसीहत
12. कमज़ोर
13. सूरदास
14. रत
17. नगन
18. लागत
19. नम
20. जतन
23. नाटक
25. नीव